न्यूज़ पेपर्स एसोसिएशन ऑफ इण्डिया

NEWSPAPERS ASSOCIATION OF INDIA

Volume XVIII वर्ष 18 | No. 06 अंक: 06 | May-2013 मई–2013 | Rs. 5/- per copy

जयपुर में युवा पत्रकार को एन.ए.आई. ने किया सम्मानित 'कलम के सिपाही' सम्मान समारोह में

❑ एन.ए.आई. डेस्क

जयपुर। भारत के समाचार पत्रों का प्रखर प्रतिनिधित्व करने वाली न्यूजपेपर्स एसोसिएशन ऑफ इण्डिया की राजस्थान इकाई प्रदेश के युवा पत्रकारों में व्यावसायिकता, नैतिकता, कर्मठता आदि नैसर्गिक गुणों का विकास करने के उद्देश्य से वार्षिक युवा पत्रकार सम्मान समारोह ''कलम के सिपाही–2013'' आयोजित किया। 10 अप्रेल 2013 को दोपहर 1 बजे से जयपुर में टोंक रोड स्थित सूचना केन्द्र में आयोजित किया गया। इस भव्य समारोह में पत्रकारिता के क्षेत्र में विशेष उपलब्धियों के बतौर युवा पत्रकारों का अभिनंदन किया गया।

इस सम्मान समारोह में वरिष्ठ पत्रकार श्री श्याम आचार्य, चंपा दीदी, श्री मिलापचंद डंडिया को लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड से नवाजे जाने के साथ ही एफएम रेडियो पिंकसिटी के श्री शेखर पारीक को ''बेस्ट आर जे'', पत्रकारिता के क्षेत्र में विशेष कार्य करने वाली महिला पत्रकार की श्रेणी में दैनिक भास्कर उदयपुर की (राजस्थान की प्रमुख महिला अपराध संवाददाता) लकी जैन, टाइम्स ऑफ इण्डिया जयपुर की (राजस्थान की एकमात्र महिला फोटो जर्नलिस्ट) श्रीमती मोलिना खिमानी, ''पेज थ्री स्टोरी कवरेज'' के लिए टाइम्स ऑफ इण्डिया जयपुर की ऋचा शुक्ला, वाणिज्य संवाददाता के रूप में बिजनेर भास्कर के श्री अंकित तिवाड़ी व ईटीवी राजस्थान के श्री राकेश, अपराध संवाददाता के रूप में महानगर टाइम्स के श्री मोहम्मद खान व जन टीवी के दशरथ सिंह, कला–सांस्कृतिक संवाददाता के रूप में दैनिक नवज्योति के श्री अनुराग त्रिवेदी व भास्कर टीवी की श्रीमती राखी जैन, राजनीतिक संवाददाता के रूप में दैनिक अंबर के दीपेन्द्र सिंह आमेरिया तथा ईटीवी राजस्थान के योगेश शर्मा, खेल संवाददाता के रूप में डेली न्यूज़ की करूणा शर्मा, धार्मिक संवाददाता के रूप में पंजाब केसरी जयपुर के श्री महेश मिश्रा व डिजी न्यूज के रामकिशन, श्रेष्ठ मानवीय स्टोरी कवरेज के लिए राजस्थान पत्रिका जयपुर की श्रीमती नेहा चौहान व ईटीवी राजस्थान के श्री आलोक शर्मा को सम्मानित किया गया । उपरोक्त पत्रकारों के अलावा श्रेष्ठ फोटो पत्रकार की श्रेणी में दैनिक नवज्योति के श्री चन्द्रमोहन आलोरिया, डीएनए के श्री पदम सैनी तथा मोर्निंग न्यूज़ के श्री दिलीप सिंह, बेस्ट वेब ब्लॉगर के रूप में ज्ञानदर्पण डॉट कॉम के सम्पादक श्री रतन सिंह शेखावत, ग्रामीण पत्रकार श्रेणी में दैनिक भास्कर सीकर के श्री संदीप हुड्डा, श्रेष्ठ ग्राफिक डिजाइनर की श्रेणी में डेली न्यूज के श्री राम गुप्ता के साथ ही दैनिक भास्कर जयपुर के श्री सुरेन्द्र बगवाड़ा, दूरदर्शन जयपुर के श्री वीरेन्द्र परिहार व श्री दिव्य गौड़ तथा जन टीवी के श्री सुरेश विश्नोई को ''विशिष्ठ कलम के सिपाही'' अवार्ड से अभिनंदन से नवाजा गया। समारोह की अध्यक्षता न्यूजपेपर्स एसोसिएशन ऑफ इण्डिया के राष्ट्रीय महासचिव श्री विपिन गौड़ ने की।

समारोह के मुख्य अतिथि जस्टिस जे. के. रांका रहे । सभी पत्रकार बंधु एवं उनके परिजन इस सम्मान समारोह में उपस्थित हुए।

श्री विपिन गौड़ ने कहां की देश मे जहाँ भी पत्रकारों को किसी भी सहायता की जरुरत है एन.ए.आई उनकी हर तरह से सहायता करेगी और जो भी पत्रकार बखूबी से अपने कार्य को अंजाम दे रहे है उनको एन. ए.आई जरुर सम्मान करेगी विपिन गौड़ ने सभी पत्रकारों को एक जुट होने के लिए कहां और धन्यवाद करते हुए कार्यक्रम का समापन किया ।

THE LOTUS LION ROARED AT GARDEN CITY

DYNAMIC LEADER DUMBED contrasting VOICES:

❑ **Pramesh Jain**

Huge throng with tremendous applause! More than 1 lakh people witnessing a breathless speech! The volentier crowd with pin drop silence! Cheers of "Vande Matharam" reaching the sky top! Yes, it is the description of a colourful festival atmosphere emerged at national college ground Basavanagudi at garden city Bangalore on the fabulous Sunday evening. The evening filled the ground with saffron flag, lotus and BJP leaders like chief minister Jagadish Shetter, ministers of cabinet, members of state legislative assembly and council for those the crown is none other than Mr. Narendra Modi, the firebrand of BJP and denoted as emerging prime minister of the party. The motivating youth icon came all the way from Gujarath to Karnataka for requesting the capital city voters to opt the symbol of lotus in voting in the up coming state assembly elections, which is going to be held on 5th of May in the entire state at once.

The vibrant concert started with the depiction of the leader's simplicity, who tactfe his mile 1st to allow the other state leaders to speak and promised of talking after them. Consequently, the session began with a few words spoken out by the CM, who talked of the capabilities of the party and threw words against weakness of Congress at center. Then started the incredible speech, which completely took over the entire multitude into the shackles of wonderful hearing.

Mr. Modi parallelized the situation of Karnataka and Gujarath, which are considered as the blossoming centers for the party in the north and south, where lotus blossomed for the first time with majority. The leader delivered his benevolent speech in favour of the party and upheld the incapabilities of

to be continue Page 6...

Sandeep Marwah Honored With SHOOT4EARTH Award At Hungary

"Sandeep Marwah has given his twenty five years to the field of film, television and media. He has created a wonderful name for himself and for his organizations including World famous Marwah Studios and Asian Academy of Film And Television. We all Hungarian film makers honor him with SHOOT4EARTH Award for his untiring contribution to this field" a citation read by festival director Gabor Kindl at the festival held at Villany, Hungary.

The award was handed over to Sandeep Marwah by a well known Oscar winning Director Jiri Menzel from Chec Republic in the presence of august audience including Takats Gyula the Mayor of Town, Jeno Hodi Chairperson of Budapest Film Academy, Szel Moni of Pixel TV, Kovesdi Szilvia the host of the event, Prof. Karl Bardosh of New York University and others.

"I am indebted to the Hungarian film, television and media fraternity for honoring me for my services to the entertainment industry. I will see to it that our relationship should take a new height from this platform" said Sandeep Marwah emotionally.

आयोडीन क्या है ?

मानव शरीर को स्वास्थ्य रखने के लिए संतुलित भोजन की आवश्यकता होती है उस भोजन में कई पोषक तत्त्व भी विधमान रहते है जो मानव शरीर के लिए लाभदायक है उनमे से आयोडीन भी तत्त्व है।

आयोडीन एक प्राकृतिक तत्व है जो हमारे शरीर के लिए अत्यंत आवश्यक है और इसकी आवश्यकता हमारे शरीर को प्रतिदिन होती है।

आयोडीन कहाँ मिलता है ? यह साधारणतः मिटटी व् पानी में पाया जाता है आयोडीन युक्त मिटटी में उगे हुए खाद्य पदार्थो से ही हमारी आयोडीन की जरुरत पूरी हो जाती है अर्थात जिस स्थान की मिटटी में आयोडीन तत्व की कमी होती है अथवा नहीं होता तो उस क्षेत्र के खाद्य पदार्थो में यह कमी होती ही है और उसका सेवन करने वालो में यह कभी निश्चित तौर पर होती है।

कमी को दूर कैसे करें:- यह सबसे सुलभ और आसन तरीका है आयोडीन युक्त नमक का सेवन।

आयोडीन नमक में ही क्यों? आयोडीन की जरुरत को पूरा करने के लिए यह जरुरी है की बहुत दम मात्र में आयोडीन हमारे शरीर को हमेशा प्राप्त होता रहे. प्रत्येक सामाजिक, आर्थिक, क्षेत्रीय एवं हर उम्र वर्ग के व्यक्ति नमक का उपयोग प्रतिदिन करता है। अतरू नमक सबसे उपयुक्त माध्यम है. इदका कारन हा की नमक को आयोडीन युक्त करना आसान भी है और सस्ता भी इसलिए नमक को आयोडीन युक्त किया जाता है।

नमक को आयोडीन युक्त करना आसन भी है और सस्ता भी इससे नमक के स्वाद, गुण और रूप में परिवर्तित भी नहीं होता है।

नमक में आयोडीन की मात्र:- आयोडीन युक्त नमक को एक आवश्यक खाद्य पदार्थ मन गया है। खाद्य अपमिश्रण निवारण अधिनियम (पीएफए) 1954 के अनुच्छेद–बी के नियम ए 15 –01 के प्रावधान के अंतर्गत आयोडीन युक्त नमक की गुणवत्ता के निम्नलिखित मानक निर्धारित किये गए है।

नमी:- नमूने के भर के 6 प्रतिशत से अधिक नही.

सोडियम क्लोरिदे - सुखी अवस्था में भार के 96 प्रतिशत से कम नहीं

पानी में न घुलने वाले पदार्थ– सुखी अवस्था में भर के 1 प्रतिशत से अधिक नहीं।

सोडियम क्लोराइड के अतिरिक्त पानी में घुलने वाले पदार्थ–
सुखी अवस्था में भर के 3 प्रतिशत से अधिक नहीं .

– आयोडीन की मात्रा –

निर्माता स्टार पर: शुष्क भार के आधार पर प्रत्येक 10 लाख भाग में 3 भाग (पी पी एम) से कम नहीं।

फुटकर दुकानदार सहित वितरण के विभिन्न स्टार पर–

शुष्क भार के आधार पर प्रत्येक 10 लाख भाग में 15 भाग (15 पी पी एम) से कम नहीं।

आयोडीन की कमी से होने वाली हानियाँ-

1– व्यस्को पर प्रभाव – थकन
ऊर्जा की कमी
आलस्य काम में आरुची
गलगंड नामक रोग
गले पर सुजन

2– गर्भवती स्त्रियों पर प्रभाव–

(1) गर्भपात

गर्भ में बच्चे की मृत्य
बच्चे का शारीरिक व् मानसिक विकास हमेशा के लिए रुक जाना
गर्भ में पल रहे बच्चे के शारीरिक व् मानसिक विकास में विकृति
बच्चे का बोना पैदा होना।

अतः गर्भवती महिलाओ को अपने और बच्चे में आयोडीन की कमी को पूरी करने के लिए आयोडीन युक्त नमक ही लिये रहना चाहिए।

3– बच्चों पर प्रभाव
शारीरिक व् दिमागी कमजोरी
आँखों का भेंगापन
शारीरिक व् मानसिक विकास में बाँधा
बहरापन, मंदबुद्धि

हो सकता है बच्चा प्रारंभ में सामान्य दिखाई दे परन्तु उम्र बदने के साथ–साथ आयोडीन की कमी से होने वाले विकार दिखाई देने लगते है।

आयोडीन की कमी से बचाओ- आयोडीन की कमी से दुष्प्रभाव न हो इस्क्स लिए नमक में घरेलु स्तर पर 15 पी पी एम आयोडीन अवश्य होना चाहिए।

गर्भवती महिला को आयोडीन कमी को रोकने के लिए आयोडीन युक्त नमक ही लिये रहना चाहिए।

पशु आहार में उपयोग होने वाला नमक आयोडीन युक्त हो।

सावधानी:- आयोडीन युक्त नमक नमी वाले स्थान से दूज ढक्कनदार डिब्बे में बंद करके रखे। गर्भ व सूर्य की रौशनी पड़ने वाले स्थान पर नहीं रखें।

गर्मी की छुट्टी मनाने के लिए जायें

प्रकृति की छटा दिखती है राजगढ़ की घाटियों में

हिमाचल प्रदेश के सोलन से लगभग 40 किलोमीटर दूर प्राकृतिक सुंदरता से परिपूर्ण जगह है राजगढ़। सिरमौर जिला स्थित इस पर्यटक स्थल पर हर तरफ हरियाली दिखती है।

यहां की घाटियों का प्राकृतिक सौंदर्य दर्शनीय है। इसे पीच वैली भी कहते हैं। कैम्पिंग और ट्रैकिंग के लिए यहां की घाटियां बेहतरीन हैं। हर तरफ फैली हरियाली घाटियों को मनोरम बना देती है। ऐसा लगता है मानो प्रकृति ने अपनी सारी सुंदरता इस घाटी को दे दी हो।

राजगढ़ के लोग काफी सक्रिय और मेहनती होते हैं। वे धार्मिक हैं। भगवान शिव और मां दुर्गा की पूजा करते हैं। यहां पर शाया मंदिर में भगवान शिरगुल की विशाल प्रतिमा स्थापित है। किवंदती के अनुसार भगवान शिरगुल पहले शाया गांव आए और बाद में वह दो हजार फीट ऊंची चुरधार पहाड़ी पर सदा के लिए विराजमान हो गए।

प्रसिद्ध बारू साहिब गुरुद्वारा भी राजगढ़ घाटी में ही है। खेड़ी के पीछे यह गुरुद्वारा भी दर्शनीय स्थल है। गिरि नदी के किनारे यह खेड़ी अद्भुत दृश्य प्रस्तुत करती है।

राजगढ़ से करीब 70 किलोमीटर की दूरी पर है हब्बन घाटी। इस घाटी को देख कर पर्यटक मंत्रमुग्ध हो जाते हैं। घाटी के मनोरम दृश्य के साथ ही यहां बड़े–बड़े पाइन, कैल, बान और देवदार के घने पेड़ हैं। इनके साथ–साथ यहां सेब और पीच के फल के बगीचे भी हैं। पूरे साल यहां का मौसम सुहावना रहता है। सदियों में यहां बर्फ का नजारा देखा जा सकता है।

राजगढ़ से दो घंटे की यात्रा के बाद हरिपुरधर आता है। यह स्थान वनज्ञानी देवी के मंदिर के कारण प्रसिद्ध है। ऐसा माना जाता है कि चुरधार के मुख्य देवता भगवान शिरगुल की यह बहन हैं। इस मंदिर के पीछे श्ट्रेकर हटश बना हुआ है।

राजगढ़ से हरिपुरधर के रास्ते में नोहराधर आता है, जहां से चुरधर के लिए ट्रेकिंग की सुविधा है। चुरधर जाते हुए रास्ते में ट्रेकिंग के कई रास्ते मिलते हैं जैसे सेलपा, दोख्ता, हरिपुरधर, नोहराधर, सरहन और हब्बन वगैरह। ट्रेकिंग के शौकीन पर्यटक यहां आकर खुश हो जाते हैं।

कोच्चि को अरब सागर का रत्न कह सकते हैं

दक्षिण भारत का खूबसूरत तटीय शहर कोच्चि देश.विदेश से पर्यटकों को आकर्षित करता है। इसे अरब सागर का रत्न कहकर पुकारें तो गलत नहीं होगा। इस शहर को दक्षिण भारत का कश्मीर भी कहा जाता है। पर्यटकों को यहां आकर ऐसी सुखद अनुभूति होती है जिसकी महानगरों के दूषित पर्यावरण में उन्होंने कभी कल्पना भी नहीं की होती।

कोच्चि एक समय उन कस्बों व द्वीपों के समूहों का नाम था जिनकी जीवन शैली व संस्कृति एक सी थी। तत्कालीन राजधानी.एरनाकुलम कोच्चि से तीन मील दूर है और कई पुलों की श्रृंखला द्वारा जुड़ी हुई है। चाहे वायुमार्ग से आएं या रेल मार्ग से, सैलानी पहले वेलिंग्टन द्वीप पर ही पहुंचते हैं। इस द्वीप की उत्पत्ति पुराने पोर्ट को गहरा करने के समय हुई थी।

कोच्चि किले की नृत्य.गायन मंडली अद्भुत है। कलाकार बिल्कुल अंग्रेजों की तरह लगते हैं लगभग पुराने इंग्लैंड वासियों का प्रतिरूप। पोर्ट के दक्षिण. पश्चिम में स्थित मैटनचेरी द्वीप में प्राचीन यहूदी समुदायों के आवास हैं। यहां पर यहूदियों के उपासना स्थल, पुर्तगालियों के चर्च, डचों की कलात्मक वास्तुकला के नमूने व सुसज्जित मस्जिदें एक साथ देखने को मिलती हैं।

ये केवल अतीत के स्मारक चिन्ह ही नहीं हैं बल्कि और भी बहुत कुछ हैं। यहां सभी तीज.त्यौहार पूरे वैभव और शानौ.शौकत से लोक उत्सव के रूप में मनाए जाते हैं। अलंकृत हाथी, पंचवाद्य, नृत्य, गायन व आकाश को प्रकाशमय करती आतिशबाजियां इन समारोहों की शोभा में चार चांद लगा देती हैं।

यहां के स्थायी निवासी यहूदियों के घर आम घरों की तरह ही लगते हैं। सड़कों को काटती हुई पतली.पतली तंग गलियों में लाइन से बने हुए सफेदी से पुते हुए घर एक दूसरे पर इस प्रकार झुके हुए हैं जैसे एक दूसरे की सांत्वना व सहारे की तलाश में हों। कोच्चि के केन्द्र में है क्रूर समय चक्र का साक्षी. कोच्चि सायनागॉग। यह लगभग 400 वर्ष के दृढ़ निश्चय व स्थिरता का गौरव प्रतीक है। इतिहासकारों का मानना है कि यहूदियों का केरल की तरफ प्रस्थान ईसा के जन्म से लगभग 600 वर्ष पूर्व ही शुरू हो गया था।

मैटनचेरी में कोच्चि की सबसे खूबसूरत इमारत डच पैलेस है। इसका निर्माण 1650 में पुर्तगालियों ने किया था। बाद में डचों ने यहां पर अपनी कला व संस्कृति की विशेष छाप छोड़ी तथा सुंदर भित्ति चित्रों की रचना भी की और इसे कोच्चि के राजा को सौंप दिया।

कोच्चि के लिए यदि आप हवाई मार्ग से आना चाहें तो कई प्रदेशों से यह सेवा उपलब्ध है साथ ही कोच्चि रेल मार्ग से भी देश के सभी हिस्सों से जुड़ा हुआ है। इरनाकुलम यहां का नजदीकी टर्मिनल है। आसपास के शहरों से कोच्चि के लिए बस व टैक्सियां भी आसानी से उपलब्ध हो जाती हैं।

Shamshad Begum

Shamshad Begam
(April 14, 1919 – April 23, 2013)

(April 14, 1919 – April 23, 2013) was an Indian singer who was one of the first playback singers in the Hindi film industry. She had a distinctive voice and was a versatile artist, singing over 6,000 songs in Hindi and the Bengali, Marathi, Gujarati, Tamil and Punjabi languages. She worked with maestros including Naushad Ali, S. D. Burman, C. Ramchandra and O. P. Nayyar. Her songs from the 1940s to the early 1970s remain popular and continue to be remixed.

Personal life

Begum was born in Amritsar, Punjab on April 14, 1919, the day after the Jallianwala Bagh massacre. Her father was Miya Hussain Baksh. She fell in love with Ganpat Lal Batto, a lawyer, in 1932 and, despite family objections, married him at the age of 15 in 1934. She had one daughter, Usha Ratra, who is married to Lieutenant Colonel Yogesh Ratra. Begum's husband died in 1955 in an accident. Since her husband's death, Begum has lived with her daughter and son-in-law in Mumbai, recently at Hiranandani Gardens in the Powai district.

In around 2004, a controversy erupted in the media, when several publications gave the false news of her death, before it was clarified that the Shamshad Begum who had died in 1998 was Saira Banu's (Dilip Kumar's wife) grandmother with the same name.

Career

1924–40

Begum's talent was first spotted by her principal when she was in primary school in 1924. Impressed by the quality of her voice, she was made head singer of classroom prayer. At 10, she started singing folk-based songs at religious functions and family marriages. She received no formal musical training. Her singing ambitions, which she held from 1929, met with opposition from her family. In 1931, when she was twelve, her uncle, who enjoyed qawwalis and ghazals, secretly took her to Jenophone (or Xenophone) Music Company for an audition with Lahore-based musician and composer, Ghulam Haider. Begum said in an interview, "I sang Bahadur Shah Zafar's (the poet-ruler) ghazal Mera yaar mujhe mile agar." An impressed Haider gave her a contract for twelve songs, with facilities provided to top singers. It was Begum's paternal uncle who convinced her father, Miya Hussain Baksh, to allow her to sing. When she won a contract with a recording company, her father agreed to let her sing on the condition that she would record in a burka and not allow herself to be photographed.[6] She earned 15 rupees per song and was awarded 5,000 on the completion of the contract on Xenophone. Xenophone was a renowned music recording company, patronised by the rich, and her popularity grew in elite circles in the early 1930s.

1941–45

Haider used her voice skillfully in some of his earlier films such as Khazanchi (1941) and Khandaan (1942). By 1940, Begum was already well established on radio. The song "Cheechi Wich Pa ke Chhalla" from Yamla Jatt of 1940 became a huge hit and popularised Pran, singer Begum and composer Haider. Haider continued to compose hit songs which Begum sang for films including Zamindar, Poonji and Shama. Director Mehboob Khan used Begum's voice in Taqdeer (1943), where he introduced Nargis as the heroine. Begum was soon singing for other composers including Rafiq Ghaznavi, Ameer Ali, Pt Gobindram, Pt Amarnath, Bulo C. Rani, Rashid Atre and M. A. Mukhtar, in the pre-independence era.

1946–55

Begum sang extensively for composers including Naushad, O. P. Nayyar, C. Ramchandra and S. D. Burman from 1946 to 1960. Naushad acknowledged in an interview that he was indebted to Begum in reaching the top, as she was famous before he became known in the late 1940s; after his tracks sung by her became highly popular, his talent was recognised. It was Begum's solo and duet songs sung for Naushad in the late 1940s and early 1950s which made Naushad famous. After Naushad became successful he recorded songs with new singers as well in the early 1950s, but kept working with Shamshad in the late 1950s and early 1960s. Naushad chose his favourite singer Begum once again to sing four out of the twelve songs in Mother India.

1955–76

After her husband's accidental death in 1955, Begum became a recluse and stopped accepting singing assignments, including recordings, for a year. The songs released between 1955 and early 1957 continued to be popular, including songs from films such as C.I.D., Naya Andaz, Baradari, Mr. & Mrs. '55 and other hits.

Retirement and death

From the late 1980s, Begum started giving occasional interviews. Her final interview was in 2012. In 2009, she was conferred with the prestigious O. P. Nayyar award for her contribution to Hindi film music. She was also conferred the Padma Bhushan in 2009.

Begum died at her Mumbai residence on the night of April 23, 2013 after a prolonged illness. She was 94. She was cremated in a small, dignified ceremony.

Information and Broadcasting minister Manish Tewari said, "The film industry has lost one of its most versatile singers. Shamshadji's style of singing set new benchmarks. Her melodious voice with powerful lyrics gave us songs that have remained popular even today."Prime Minister Manmohan Singh said "She was an artist of extraordinary talent and abilities, and the songs she has left behind in her long career, which she started with AIR in 1937, will continue to enthral music lovers." Her daughter Usha Ratra said "She kept herself away from glamour of the industry despite being one of the top singers of her era as she did not like limelight. My mother used to say that artistes never die. She wanted to be remembered for her songs.

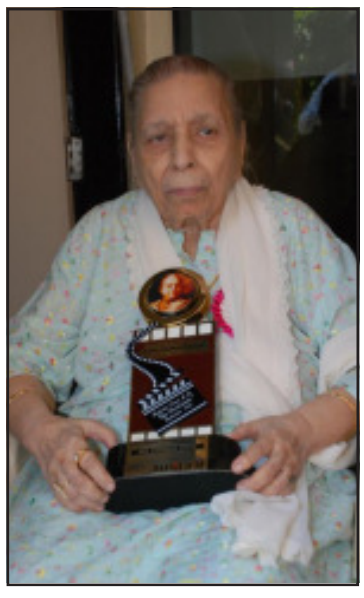

सम्पादकीय

देश तो नहीं देशवासी बन रहे है दरिन्दे

लाडली हूँ पर क्या करू बेबस हूँ इस देश मे इंसान है दरिन्दे रहते है-

❑ विपिन गौड़

शायद यही सोच रही होगी गुडिया हॉस्पिटल के उस कमरे मे जहाँ जाने से हर इंसान डरता है तोबा करता है इससे पहले भी निर्भया ने भी अपने साथ हुए दुष्कर्म के बाद एसे हे एक अस्पताल के कमरे मे दम तोडा था दम तोडा था अभी निर्भया का दर्द दिल से निकला भी नहीं था की तमाम एसे दरिंदगी के किस्से आ गये जिससे देश फिर से देहल गया चाहे वोह राजस्थान हो मध्य प्रदेश हो या दिल्ली हो और दुष्कर्म उस उम्र की बच्ची के साथ हुआ जिसको देख के इंसान ये सोचता है की जब मेरी बेटी हो तो ऐसी हो क्या उम्र होती है ५ साल १० साल पर फिर भी देश मे एसे दरिन्दे है जो इंसान को इंसान नहीं सोचते है और एसे दरिंदगी को अंजाम देते है जिससे देश थर्रा जाता है।

आज देश मे हालत एसे हो गए है की देश मे महिला वर्ग का पैदा होना ही अभिशाप बनता जा रहा है देश मे एसे दरिन्दे है की जिनको डर नाम से भी डर नहीं लगता बलात्कार के किस्से दिन बा दिन इतने बढ़ते जा रहे है की देश की सुरक्षा व्यवस्था पे कई सवाल उठाए जा रहे है सभी छोटे बड़े दुसरे देश भारत मे होने वाले दुष्कर्मों की निंदा कर रहे है पर फिर भी देश को चलने वाले देश के राजनेता सिर्फ अपनी कुर्सी को संभाले बेठे है उनके बैटन से एस लगता है की उन्हें देश की जनता की चिंता ही नहीं है जिनता है तो मंत्रालय की और अपनी कुर्सी की। जब भी देश मे किसी बड़ी दरिंदगी को अंजाम दिया जाता है तो सभी नेता अपने अपने घरों मे छुप के बेठ जाते है और दूसरी पार्टियों के नेता सड़कों पे उतर जाते हैं और उनकी वजह से आम जनता को परेशानी होती है। आम आदमी इतना डर गया है इतना परेशां हो गया है की मरा हुआ है पर जी रहा है देश मे लोग सड़कों पे है और अपनी सुरक्षा की मांग कर रहे है महिलाओं के लिए सुरक्षा के लिए सही कानून बनाने की मांग कर रहे है पर सरकार न ही कुछ सुन रही है न ही अपनी प्रतिक्रिया दे रही है।

जब संसद मे महिला सुरक्षा बिल बनाने की बात की गई तो संसद मे सांसदों ने छुट्टी ले ली सुनने मे ये आया था की महिला बिल पर जब संसद मे पास करने के लिए बात की गई तो सिर्फ लगभग ११० संसद हे संसद भवन मे थे पर न नकोर करते हुए भी बिल पास हुआ पर फिर भी बिल का किसी को कुछ पता नहीं है और जो बिल पास हुआ उसके आधार पे कहीं भी कानून काम नहीं कर रहा है उल्टा जब एक लड़की पुलिस के पास शिकायत करने जाती है तो पुलिस के आला आधिकारी उसे थप्पड़ मार कर भगा देते है गुडिया के पिता को शिकायत दर्ज न करने के लिए पुलिस 2000 रुपया की रिशवत देती है

अब ये सोच के अजीब लगता है देश की सुरक्षा का बीड़ा जिस पे है वो ही अपना पल्ला झाड रहा है देश को चलने वाले नेता दुःख चिंता जाता रहे है पर देश मे सही कानून कब बनेगा दुसरे राजनितिक दल सड़कों पे तो उतरे है पर क्या भरोसा करना सही होगा देश मे क्या महिला वर्ग सुरक्षित है क्या क्या देश मे रुकेंगे दुष्कर्म क्या सुधरेंगे देश के हालात क्या प्रधान मंत्री सुनेगे देश की आवाज ऐसे कई सवाल देश के सामने देश की जनता के सामने देश के राजनेताओं के सामने है क्या होगा देश का देहस मे दरिंदी कब होगी खतम सब कुछ एक बड़ा सवाल बन के रह गया है।

पाकिस्तान में हिन्दुओं का रहना कठिन ही नहीं लगभग असंभव हो गया है!

❑ दिलीप कुमार

पिछले दिनों पाकिस्तान से कुछ हिन्दु परिवार प्रयागराज में महाकुम्भ के अवसर पर स्नान करने के लिये भारत आये थे । इन परिवारों के सभी सदस्यों की संख्या कुल मिला कर चार सौ के आस पास बनती है ।

ये लोग दिल्ली में ठहरे हुये हैं । भारत सरकार ने इन्हें भारत में रहने के लिये केवल सीमित दिनों के लिये वीजा दिया था । इन हिन्दुओं के भारत में रहने के वे दिन समाप्त हो गये हैं । लेकिन वे वापिस पाकिस्तान जाना नहीं चाहते । उनका कहना है कि पाकिस्तान में हिन्दुओं का रहना कठिन ही नहीं लगभग असंभव हो गया है । उनकी लड़कियों को उठा लिया जाता है । उनसे बलात्कार होता है । मजहब बदलने के लिये उन्हें विवश किया जाता है । यह तो केवल बानगी है । इन हिन्दुओं की शिकायतों की फेहरिस्त बहुत लम्बी है । उस पर चर्चा करने की यहाँ जरुरत नहीं है ।

लेकिन असली प्रश्न है कि ये हिन्दु जो दुख भोग रहे हैं , उसमें इनका क्या दोष है ? पाकिस्तान का निर्माण कांग्रेस और जिन्ना का , भारत की सत्ता बाँटने के लिये किया गया आपसी समझौता था । विभाजन के लिये मुसलमानों ने जिन्ना को सहमति दे दी होगी (यह भी संदेहास्पद है , क्योंकि शत प्रतिशत मुस्लिम आबादी वाले सीमान्त प्रान्त के खान अब्दुल्ल गफ्फार ने कांग्रेस को कहा था कि आपने हमें भेडियों के हवाले कर दिया है) लेकिन हिन्दुओं ने तो कभी विभाजन का समर्थन नहीं किया था । वे तो अन्त तक कांग्रेस पर विश्वास करके बैठे रहे , तब कांग्रेस घोषणा कर रही थी कि विभाजन हमारी लाशों पर होगा । पाकिस्तान के ये हिन्दु कांग्रेस के उसी पाप और विश्वासघात का फल आज पाकिस्तान में भोग रहे हैं ।

पाकिस्तान के प्रसिद्ध अंग्रेजी अखवार डान ने १२ दिसम्बर १९५५ को पाकिस्तान में हिन्दुओं की दशा , दिशा और भविष्य पर एक गहरी टिप्पणी की थी । अखघ्बार ने लिखा कृ बहुत से लोग भारत और पाकिस्तान की तुलना करते हुये कहते हैं कि भारत में मुसलमानों के लिये भी समान अवसर हैं और वे वहाँ उच्च पदों पर भी विराजमान हैं । लेकिन पाकिस्तान में तो हिन्दुओं के लिये कोई स्थान नहीं । इसके आगे अखवार ने इस आलोचना का स्वयं ही उत्तर दिया है । अखघ्बार का कहना है कि यह तुलना ही अपने आप में भ्रामक है । भारत में मौलाना अब्दुल कलाम आजाद और रफी अहमद किदवई जैसे जो लोग उच्च पदों पर बैठे , वे कभी मुसलमानों के साथ नहीं थे और शुरु से ही विभाजन का विरोध करते थे । लेकिन पाकिस्तान में शायद ही कोई ऐसा हिन्दु हो जिसने विभाजन का समर्थन किया हो । इस लिये पाकिस्तान में रह रहे हिन्दु मूल रुप से पाकिस्तान समर्थक नहीं हैं । इस लिये इन्हें पाकिस्तान में कोई जगह नहीं दी जा सकती ।

अखवार की इस व्याख्या से स्पष्ट हो गया है कि हिन्दुओं का पाकिस्तान में क्या भविष्य हो सकता है । इसे देख कर ही पाकिस्तान से अधिकांश हिन्दु निकल कर भारत आ गये । उस समय भी महात्मा गान्धी और पंडित जवाहर लाल नेहरु हिन्दुओं को पाकिस्तान से न आने के लिये अपील कर रहे थे । हो सकता है कुछ हिन्दुओं ने गान्धी नेहरु की अपीलों पर विश्वास कर लिया हो या फिर उनके पास भाग आने का सामर्थ्य न हो । वे वहीं फँसे रह गये । जिन्होंने गान्धी नेहरु पर विश्वास नहीं किया , वे पाकिस्तान से उसी समय भारत में आ गये थे । उनमें से एक मनमोहन सिंह भी थे । वे भारत में आकर यहाँ के प्रधानमंत्री बने हुये हैं ।

लेकिन जो उस समय पाकिस्तान से भाग कर नहीं आ पाये थे , उनमें से कुछ अब भाग कर आ पाये हैं । वे दिल्ली में डेरा डाल कर बैठे हैं । वे मनमोहन सिंह को खोज रहे हैं । क्योंकि इन हिन्दुओं का तो भारत में और कोई परिचित नहीं हैं । मनमोहन सिंह ही उनके अपने हैं । जिन गाँवों से ये हिन्दु आये हैं , उसी प्रकार के वहां के किसी गाँव से कभी मनमोहन सिंह आये थे । फर्क इतना ही है कि मनमोहन सिंह कुछ साल पहले आ गये थे और ये लोग उनके कुछ साल बाद आ पाये हैं । लेकिन मनमोहन सिंह दिल्ली में रहते हुये भी अपने इलाके के इन लोगों को मिलने नहीं गये । मिलने की बात तो दूर उन्होंने इनकी बात तक नहीं पूछी ।

ये हिन्दु एक और सज्जन की भी बेकरारी से तलाश कर रहे हैं । वह सज्जन भी कभी इन्हीं में से एक था । वे हैं राजेन्द्र सच्चर । राजेन्द्र सच्चर के पिता भीमसेन सच्चर पाकिस्तान बनने के बाद भी पाकिस्तान में ही रहे । उसे अपना नया वतन मान कर । पर पाकिस्तान वालों ने उन की इस बात पर विश्वास नहीं किया कि वे पाकिस्तान को अपना वतन मानते हैं। डान अखबार ने तो अपनी व्याख्या बहुत बाद में छापी लेकिन सच्चर पाकिस्तान में हिन्दुओं के भविष्य को जल्दी समझ गये और सही समय पर भारत चले आये । यहाँ वे पंजाब के मुख्यमंत्री बने । पाकिस्तान से आने वाले ये हिन्दु अब उनके बेटे राजेन्द्र सच्चर की भी तलाश कर रहे हैं । उनको लगता है कि उनकी हालत को और कोई समझे चाहे न समझे , सच्चर तो समझेंगे ही । लेकिन सच्चर भी कहीं दिखाई नहीं दे रहे ।

आखिर मनमोहन सिंह और राजेन्द्र सच्चर अपने ही भाई बहनों की संकट की इस घड़ी में मदद करने से क्यों बच रहे हैं ? शायद इसलिये कि ऐसा करने पर वे साम्प्रदायिक कघ्रार दिये जायेंगे । इसलिये ये दोनों सज्जन बंगला देश से आकर भारत में अवैध रुप से बस गये चार करोड़ से भी ज्यादा बंगलादेशी मुसलमानों के मानवीय अधिकारों के लिये दिन रात एक कर रहे हैं । मोती लाल सीतलवाड की बेटी तीस्ता सीतलवाड ने विभाजन का दर्द तो नहीं ही भोगा होगा , इसलिये वे पाकिस्तान से आये इन हिन्दुओं का दर्द समझ पायेंगी , ऐसी आशा नहीं करनी चाहिये , लेकिन मुसलमानों की स्थिति को लेकर उनका उदरशूल कभी शान्त नहीं होता । क्या ही अच्छा होता , वे दिल्ली आकर इन शरणार्थियों से भी मिल लेतीं । उसको भी शायद वही भय हो कि ऐसा करने से साम्प्रदायिक हो जाने का खतरा मँडराने लगेगा ।

बहुत से लोगों को शायद अब पता न हो कि एक बार कैरेबियन देशों के दो सांसद भारत में नेहरु के पास इसलिये आये थे कि उन देशों में हिन्दुओं को अपने संस्कार करवाने के लिये पुरोहित नहीं मिलते , इसलिये भारत सरकार यदि कुछ पुरोहित वहाँ भेज दे तो वहाँ के हिन्दु सरकार के बहुत आभारी होंगे । नेहरु ने उनको बुरी तरह डाँटा था और इस घटिया साम्प्रदायिक कार्य से भारत को दूर रखने की अपनी प्रतिज्ञा दोहरा दी थी । तब किसी ने उन सांसदों को राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के मुखिया गुरु गोलवलकर के पास भेज दिया था । गुरु जी ने तब विश्व भर के हिन्दुओं की संकट गाथा सुनने और उसे दूर करने का प्रयत्न करने के लिये विश्व हिन्दु परिषद की स्थापना की थी । आज पचास साल बाद भी , जब पाकिस्तान से ये हिन्दु अपनी संकट गाथा लेकर दिल्ली पहुँचे हैं तो उन्हीं में से एक मनमोहन सिंह और राजेन्द्र सच्चर ने साम्प्रदायिकता के डर से उनके दुख को दूर करना तो दूर , उनकी करुण गाथा सुनना भी गवारा नहीं किया। अन्ततः विश्व हिन्दु परिषद के डा० प्रवीण भाई तोगडिया ही उनके पास पहुँचे।

यह धुआं सा कहां से उठता है

❑ प्रियंवद

कुछ दिन पहले राजी सेठ जी का फोन आया था–'देवेंद्र इस्सर नहीं रहे।' इस फोन से कुछ दिन पहले 'अकार' के सिलसिले में राजी सेठ जी से देवेंद्र इस्सर के बारे में बातें हुई थीं। उसी समय उन्होंने बताया था कि उनकी स्थिति बहुत खराब है। परिवार में कोई देखभाल नहीं करता। शारीरिक तौर पर बहुत समस्याएं थीं। अकेले रहते थे।

'कब?' मैंने पूछा

'करीब पंद्रह दिन पहले... लेकिन पता आज लगा इसीलिए तुमको अब बता रही हूं' कुछ और वाक्यों के बाद यह बात खत्म हो गई। फिर भी कुछ बातें मन में रह गईं।

यह एक बड़े और विस्मृत किए जा चुके लेखक की कायिक मृत्यु थी। कायिक मृत्यु तो सबकी होती है। इस तरह देखें तो इसमें विशेष कुछ नहीं था। लेकिन काया की मृत्यु के अलावा एक लेखक की मृत्यु अंदर के रचनाकार के मरने से भी होती है। उसका रचनाकार मर जाता है और उसे अपनी इस मृत्यु के बारे में स्वयं पता तक नहीं चलता। इस मृत्यु के विविध रूप होते हैं। यह काया की मृत्यु की तरह सीधी, सरल और प्रत्यक्ष नहीं होती। कोशिश करता हूं कि मन की इन सलवटों को सिलसिले के साथ खोल सकूं।

वह स्थिति सबसे जटिल होती है जब लेखक के अंदर उसका रचनाकार होना ही उसको तोड़ने लगता है। ६ानबाद 'संगमन' में लवलीन आई थीं। उस समय वह डिप्रेशन की बीमारी से गुजर रही थीं। दवाएं ले रही थीं। रात में जब हम साथ बैठे तो वह एक सिगरेट से दूसरी सिगरेट जला रही थीं... शराब भी साथ थी। तब उन्होंने बताया कि उनके डॉक्टर ने उपचार के एक हिस्से की तरह यह करने को कहा है। एक बात और जो उनके डॉक्टर ने कही थी कि हर लेखक हमेशा सामान्य और मानसिक असंतुलन की सीमा रेखा पर चलता रहता है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि उसके अंदर हमेशा एक रचनात्मक मानसिक संघर्ष और तनाव रहता है जिसके कारण उसके मानसिक असंतुलन की ओर चले जाने का खतरा हमेशा बना रहता है। जाहिर है हम सब लेखक इस स्थिति से गुजरते हैं या निरंतर इसी में रहते हैं। खासतौर से वे जो अपने संपूर्ण वर्तमान का विरोध करते हुए प्रतिपक्ष का साहित्य रचते हैं, और इनमें भी वे जो गहरी संलग्नता, आवेग और उत्तेजना के साथ अपनी रचनात्मकता से जुड़े रहते हैं। दार्शनिक भी सदैव इसी मानसिक स्थिति के आस–पास रहता है। वैसे भी दार्शनिक वास्तविक और प्रत्यक्ष जगत को अस्वीकार करता है। इसी नकार के कारण वह अपनी कल्पनाओं या स्वप्नों या आग्रहों के अनुरूप अपने अंदर वास्तविक जगत के समानांतर एक जगत बना लेता है। उसका अपना सृजित यह जगत उसके प्रत्यक्ष, वास्तविक जगत से मुठभेड़ करता रहता है। निरंतर चलने वाली इस मुठभेड़ की थकान धीरे–धीरे उसकी चेतना को ढंक लेती है। उसकी हर शिरा को तोड़ देती है। विक्षिप्त हो जाने वाले दार्शनिकों की लंबी सूची है।

वर्ष 2000 से पहले मैं 'परछाईं नाच' लिख रहा था। धीरे–धीरे उसकी संलग्नता और उत्तेजना इतनी बढ़ती चली गई कि मैं हर समय उसके पात्रों के बीच रहने लगा। अचानक नींद से उठकर कोई संवाद लिखने लगता था या कुछ और पंक्तियां। यह सब लंबे समय तक, लगभग छह महीने तक तो चला ही। उपन्यास पूरा हो गया। उसके कुछ ही दिन बाद शायद वर्ष 2000 के अंत में उस जहाज का अपहरण हुआ जिसे कंधार ले जाया गया था और फिर हाफिज सईद को छोड़ा गया था। उपन्यास का तनाव वैसे शायद खत्म हो जाता, लेकिन वह इस घटना से जुड़ गया। भारतीय और विश्व परिदृश्य पर मुसलमानों से जुड़े बहुत से प्रश्न दिमाग में घूमने लगे। उनके धर्म, इतिहास, राजनीति, जेहाद और आतंकवाद के साथ उस स्थिति से निपटने के भारतीय राजनीतिज्ञों के तरीकों पर गहरा क्षोभ, क्रोध और बेचैनी रहने लगी। इन्हीं क्षणों के बीच मैंने 'फाल्गुन की एक उपकथा' लिखा जो सीधे इन प्रश्नों से जन्मा था। उसके खत्म होते ही अचानक मैंने एक शाम देखा कि मैं अपने मस्तिष्क को कहीं भी केंद्रित नहीं कर पा रहा हूं। अजीब अनुभव था। अगर टी.वी. पर कोई गाना देखता था तो मेरा मस्तिष्क अचानक उसमें दिखते चेहरों से जुड़ी कोई दूसरी फिल्म, दृश्य या गाने की किसी पंक्ति में उलझ जाता। उसे याद करने की कोशिश में मैं परेशान हो जाता। या फिर एक मिनट में कई दृश्य या स्मृतियां स्लाइड की तरह घूम जातीं। जाहिर है अवचेतन मस्तिष्क अधिक सक्रिय हो गया था। इसके बाद फिर दूसरे लक्षण भी आने लगे। नींद आनी बंद हो गई। इस सबका असर दिखने लगा। अवसाद और बेचैनी का रोग शुरू हो गया था। दवा लेनी पड़ी। एक साल तक कुछ भी नहीं लिखा। जो भी हुआ, लब्बोलुआब यह कि यह सीख लिया कि कभी उत्तेजना और आवेग में लंबे समय तक नहीं लिखना है। यह खतरे को निमंत्रण देना है। मेरे युवा साथी चाहें तो इस बात का ध्यान रख लें। कार निरंतर फर्स्ट गेयर में चलाने पर इंजन गर्म भी होगा और कहीं कुछ बड़ा डैमेज भी होगा ही। बाद में लवलीन की मृत्यु इसी स्थिति में हो गई थी।

इसी से जुड़ी एक और जटिल स्थिति है जिसे इस रोग से कुछ ठीक होने के बाद लेखक समझ नहीं पाता। शैलेश मटियानी और स्वदेश दीपक के जिक्र से इसे समझना सरल होगा। शैलेश मटियानी आई.आई.टी. कानपुर में थे जब उन्हें अपने पुत्र की हत्या की सूचना मिली। इस घटना ने ही उनके मानसिक संतुलन पर तत्काल प्रभाव डाला था, लेकिन यह घटना ही उनके मानसिक असंतुलन का एकमात्र कारण हो, ऐसा नहीं था। वह इसके बहुत पहले से लगातार अभाव, संघर्ष और साहित्य की दुनिया के कुछ लोगों की क्रूरता से अकेले जूझ रहे थे। नए मित्र शायद नहीं जानते हैं, लेकिन उन्हें बताना जरूरी है कि साहित्य की बनाई हुई नकली, आरोपित और बौनों को कंधों पर उठाने वाली कथित मुख्यधारा से राहुल, रांगेय राघव, इलाचंद्र जोशी, बलवंत सिंह, शिवप्रसाद सिंह, कामतानाथ की तरह ही बाहर कर दिए गए शैलेश मटियानी साहित्य के प्रति बेहद निष्ठावान, समर्पित, प्रतिबद्ध और बहुत सधी कलम वाले लेखक थे। उनकी कुछ कहानियां, खासतौर से 'दो दुःखों का एक सुख' जैसी, प्रेमचंद की कहानियों से टक्कर लेती हैं। जीवन की तमाम विषमताओं, आर्थिक संकटों और इलाहाबाद के साथी लेखकों की ईर्ष्या व निंदा के बाद भी, उन्होंने जीवन में साहित्य को साधना की तरह जिया था। बाबरी मस्जिद गिरने के बाद के दिनों में उन्होंने हिंदूवाद के समर्थन में तर्कपूर्ण और प्रभावी पक्षधरता के लेख लिखने शुरू किए थे। हालांकि अपने लेखन में वे सदैव इसके विपरीत रहे थे। यह विचलन या परिवर्तन क्यों था यह मैं तो नहीं, लेकिन मेरे अग्रज या उनके समकालीन बेहतर बता सकेंगे। हां, इसके पहले एक घटना जरूर ऐसी हुई थी जो संभवतः समाज, राज्य, संविधान और कानून को लेकर उनकी पूरी दृष्टि और सोच के बदलने का कारण हो सकती थी। यही घटना उनके मानसिक असंतुलन की बीज भूमि भी थी। उन्होंने अपने समय के सबसे ताकतवर संपादक व पत्रिका धर्मवीर भारती और 'धर्मयुग' के खिलाफ मुकदमा किया था। यह पूरा मुकदमा उन्होंने अकेले सुप्रीम कोर्ट तक लड़ा। वकील के पैसे नहीं थे इसलिए वह अपनी पैरवी खुद करते थे। इस मुकदमे की तैयारी के दौरान ही उन्होंने कानून और भारतीय संविधान का अध्ययन किया था। उनके कई लेख ऐसे छपे थे जिसमें उन्होंने संविधान की कमियां दिखाते हुए उसकी धज्जियां उड़ाई थीं। मुकदमा वे हार गए। इस लड़ाई ने उनको बहुत स्तरों पर बुरी तरह तोड़ा। मुकदमे की पृष्ठभूमि क्या थी, मुकदमा क्या था, विशेष रूप से इलाहाबाद के किस लेखक की इसमें क्या भूमिका थी, यह पता किया जा सकता है। आर्थिक रूप से शैलेश मटियानी कभी मजबूत नहीं थे। चंदे के सहारे पत्रिका निकालते थे। साहित्य में लड़ते हुए ही जीना उनका तरीका था इसलिए उनके अंदर तनाव निरंतर बने रहते थे।

पुत्र की हत्या ने उनका मानसिक संतुलन बिगाड़ दिया था। लंबे समय तक उनका इलाज चला। बाद में वह काफी ठीक भी हो गए। फिर उन्होंने वही गलती की जो ऐसी स्थिति में कमोबेश हर लेखक कर देता है, और डॉक्टर भी जिसे करने की सलाह देते हैं। उन्होंने फिर लिखना शुरू कर दिया। 'अकार' के प्रवेशांक के लिए मटियानी जी ने शानदार लंबी कहानी 'नदी किनारे का गांव' लिखी। कुछ समय बाद ही मटियानी जी फिर मानसिक असंतुलन के शिकार हो गए। उसके बाद वह उससे निकल नहीं पाए, उनकी मृत्यु के दो दिन पहले गिरिराज किशोर जी जब अस्पताल में उनसे मिले तो वह चेन से पलंग के साथ बंधे हुए थे।

स्वदेश दीपक भी जब थोड़ा ठीक हुए तो उन्होंने 'मैंने मांडू नहीं देखा' जैसी विलक्षण कृति लिखी। मैं जब इसकी किश्तों को पढ़ रहा था तो उसकी कौंधती हुई, अंदर तक धंसने वाली भाषा की गहनता और लय से हतप्रभ था। वैसे तो स्वदेश दीपक के पास यह भाषा हमेशा से ही थी, लेकिन इस रचना की भाषा में कहीं कुछ असामान्य था। यह लगभग नीत्शे की भाषा के आस–पास की और अंदर तक छीलकर रख देने वाली भाषा थी। 'मैंने मांडू नहीं देखा' लिखने के दौरान निश्चित ही वह पूरे आवेग और उत्तेजना में रहे होंगे। उन्हीं स्मृतियों और क्रूर अनुभवों में लौट गए होंगे जो अवचेतन मैं शायद लुप्त हो चुके थे। एक दिन सुनाई दिया कि स्वदेश दीपक का कोई पता नहीं है कि वे कहां हैं। आज तक भी वे लापता हैं।

लेखक की एक और तरह की मृत्यु धीरे–धीरे उसके रचनाकार के सूखते जाने से भी होती है। यदि वह सचेत है तो इस मृत्यु की आहट सुन लेता है। निर्मल वर्मा की कहानी 'सूखा' संभवतः इस विषय पर हिंदी की अकेली कहानी है। हेमिंग्वे ने आत्महत्या इसीलिए की क्योंकि वह अपने अंदर के रचनाकार के सूख जाने को महसूस कर रहे थे और इसे स्वीकार नहीं कर पाए। 1952 में 'द ओल्ड मैन एंड द सी' आया था। इसके बाद 1961 में आत्महत्या तक हेमिंग्वे कुछ भी महत्वपूर्ण नहीं लिख पाए। उसके पहले वह गहरे अवसाद में रहे। मृत्यु के कुछ दिन पहले उनके मित्र ए.ई. हाशनर के साथ हुई उनकी बातचीत के अंश पढ़ना जरूरी हैं।

'मैंने बहुत विनम्रता से कहा 'पापा (हेमिंग्वे) तुम अपने को मारना क्यों चाहते हो?'

वह केवल एक क्षण हिचकिचाए फिर वह अपने पुराने उद्देश्यपूर्ण तरीके से बोले–'तुम क्या समझते हो कि बासठ साल के आदमी को कैसा लगता है जब वह यह महसूस करता है कि उसने अपने से जो वायदा किया था वैसी किताबें और कहानियां नहीं लिख सका...'

'लेकिन अभी के लिए तुम लिखना एक ओर क्यों नहीं रख देते...?'

'मैं नहीं कर सकता... क्योंकि देखो, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि मैं एक दिन नहीं लिखता या एक साल या दस साल, जब तक कि मेरे अंदर यह बोध पूरी दृढ़ता से है कि मैं लिख सकता हूं। लेकिन इस बोध के बगैर एक दिन जीना या इसके बारे में निश्चित न होना, मृत्यु है।' हेमिंग्वे से एक साक्षात्कार में जब जर्मन पत्रकार फैलिपे ने पूछा– 'हेमिंग्वे... क्या आप मृत्यु के बारे में अपनी भावनाएं बताएंगे।' हेमिंग्वे ने कहा '...हां... एक और वेश्या।' हेमिंग्वे ने कहा कि जब तक यह विश्वास है कि मैं लिख सकता हूं, कोई चिंता नहीं है, लेकिन इस बोध का खत्म हो जाना मृत्यु है। इसी को थोड़ा और बढ़ाएं तो यह बोध कि मैंने जो कुछ भी आज तक लिखा सब व्यर्थ है, रचनाकार की ऐसी मृत्यु का विस्तार है। ऐसा कम लेखक कर सकते हैं, लेकिन होता है। काफ्का ने अपने मित्र मैक्स ब्राड से कहा था कि उसकी मृत्यु के बाद वह उसकी सब रचनाएं जला दे। यह विरक्ति यहां तक पहुंची थी कि काफ्का ने ब्राड को आखिरी पत्र में लिखा था कि 'उसका प्रत्येक शब्द, डायरी, पत्र, लिखा हुआ सब कुछ, बिना किसी अपवाद के जला दिया जाए और वह भी जितनी जल्दी संभव हो...।' बहुत कुछ स्वयं काफ्का ने आग की लपटों में कई बार डाला था। करीब 20 नोटबुक्स डोरा ने आग में डाली थीं जिन्हें काफ्का अपने पलंग पर लेटे जलते हुए देखता रहा था।

इसी का और विस्तार है जब कोई रचनाकार या कलाकार उस पूरे परिदृश्य, उस पूरे जगत से ही विरक्त हो जाता है। ग्रेटा गार्बो ने स्वयं को एक छोटे से फ्लैट में बंद करके सिने जगत को हमेशा के लिए त्याग दिया था। यहां तक कि कोई उसकी झलक भी न पा ले, इसलिए वह खिड़की तक नहीं खोलती थी। फोटोग्राफर कैमरा लिए घंटों सड़क पर छुपकर बैठे रहते थे। यही सुचित्रा सेन ने किया है। अपने घर में स्वयं को पूरी तरह बंद कर लिया है। सिर्फ बेटी से मिलती हैं। दादा साहब फालके पुरस्कार देने की जब बात हुई थी तो कोई उनसे संपर्क ही नहीं कर पाया।

Admission Open
DELHI Paramedical & Management Institute Estd. 1996
DPMI®
Delhi Paramedical & Management Institute
Campus: B-20, New Ashok Nagar (Near New Ashok Nagar Metro Station), Delhi 110 096, Ph.: 011-22715390, 22710006
Email: dpmidelhi@yahoo.in Web.: www.dpmiindia.com

महिलाओं को लेकर लोगों की सोच कब बदलेगी

❑ पिंकी सिंह

हमे तो भगवान ने एक इन्सान बनाया पर कुछ इन्सान अपनी इंसानियत को भूल कर हैवान क्यों बन जाते है ?क्या उन लोगों के अंदरकी इंसानियत इतनी खत्म हो जाती है । कि वे उन मासूमों की जो धरती पर जन्म लेने के साथ ही मार दिये जाते है या उनके साथ घिनौने अपराध जैसे बलात्कार ,यौन शोषण जैसे घृणित घटनाएँ होते है!

जब ये मासूम बेटीयो के रूप मे जनम लेती है! तो हमारे समाज के कुछ ऐसे निर्दय लोग होते है ! जो इनमे से कुछ बेटियों को जन्म लेने से पहले माँ के गर्भ में हत्या कर देते है । और कुछ तो बेटियो को जन्म लेते ही मार दी जाती है । क्यों वे भूल जाते है । कि वे भी एक औरत से ही जन्म लिया है । जिन्हे, माँ ,कहते है । वे माँ भी तो किसी की बेटी ही है । हमारे देश में नारियों को देवी का रूप माना जाता है । फिर क्यों इनके साथ ये अत्याचार होती है? इन्ही अत्याचारो में सबसे बड़ी अत्याचार है बलात्कार की घटनाऐं, महिलाओ के साथ छेड–छाड, दुर्व्यवहार इत्यादि ।2012 मे की गई एक सर्वे के अनुसार पूरे भारत मे 7,653 बलात्कार के मामले उजागर हुआ है जिनमे से केवल दिल्ली मे 453 मामले है । पर अफसोस की इन घटानाओ मे दिन–प्रतिदिन तेजी से इजाफा होती जा रही है । आखिर इन घटनाओ मे बढ़ोतरी होने का सबसे प्रमुख कारण है हमारी कानून व्यवस्था और हम समाज मे रहने वाले लोगों की सच मे कमजोरी जो कही न कही इन घटनाओं को घटित होने मे सहायक सिद्ध हो रही है । कानून वयवस्था की सबसे बड़ी कमजोरी है पुलिस व्यवस्था जिसमे पुलिस द्वारा की जाने वाली लापरवाही ! अगर कोई पीडिता अपनी शिकायत पुलिस को करती है तो पुलिस तुरन्त करवाई करने के बजाय देर करते है। या फिर पुलिस अपने पुलिस थाने क्षेत्र थाने का हवाला देकर केस को न लेने कि कोशिश करते है । और अपने आधार भूत कर्तव्य को भूल जाते है । तथा हमारे समाज के कुछ ऐसे लोग भी होते है जो इन स्थिति मे मदद करने के बजाय पलाझाड कर बच निकलते है। इसका ज्वलंत उदाहरण है । दामिनी केस उसके भी केस मे यही बात हुई और उस निर्दोष की जान चली गई । पर अब हमारी पुलिस और सरकार महिलाओ के प्रति काफी जागरुकहो गए है। इन घटनाओ से निपटने के लिए सरकार और पुलिस द्वारा कई ठोस कार्य किये जा रहे है। जिनमे से टॉल फ्री हेल्पलाइन नंबर, जगह – जगह पर सी.सी.टी.वी. कैमरा, सादी वर्दी मे महिला पुलिसकर्मी इत्यादि उपलब्ध किए जा रहे है इन सभी व्यवस्थाओ के होने के बावजूद भी महिलाओ की सुरक्षा हम समाज के लोगों को करनी चाहिए।

समाज मे रहने वाले लोगो को महिलाओ के प्रति बुरी सच को त्याग कर अच्छी भावना और सच रखे तभी महिलाए सुरक्षित और आजादी भरी जीवन व्यतीत कर पाऐगी। इन सभी मे सबसे महत्वपूर्ण है। महिलाओ को भी अपनी सुरक्षा के लिए खुद जागरुक रहना होगा । किसी भी अनहोनी के सामना करने के लिए महिलाओ को खुद सक्षम होना पडेगा।

कविता

अमन की आशा

दिल्ली वालो अपने दिल को बुद्ध करो या क्रुद्ध करो..
कश्मीर को दान करो या देश द्रोह से युद्ध करो
हिम्मत है तो ठोकर मारो दुनियां के हथकण्डों पर
इजराइल से जीना सीखो अपने ही भुजदण्डों पर..

ये जो तुम्हारी 'अमन की आशा' की तैयारी है
ये भारत के स्वाभिमान को खोने की तैयारी है
खुद्दारी ललकार रही है गीता का दर्शन पढ लो
जो अजगर फूंकार रहा ह फौरन उसका फन कुचलो

सेना को अधिकार सौंप दो और चुनौती दस दिन की
पहले दिन ही गोला दागो नाभिकुण्ड पर रावण की
घाटी के नरसंहारों का गिन–गिन कर उत्तर मांगो
जो आतंकी जेलों में हैं सब को सूली पर टांगो

पर हमने सिंह गर्जना वाला तेवर छोड दिया
वोट बचाने के चक्कर में देश बचाना छोड दिया
कब तक आखिर कब तक बोलो कब तक ये मजबूरी है
वोट बैक की लाचारी से पहले देश जरुरी है

कभी नहीं इतना कायर दिल्ली दरबार हुआ होता...
कभी नहीं इतना कायर दिल्ली दरबार हुआ होता...

काश आज भी 1971 वाला दौर हुआ होता
तो दिल्ली के आगे भीगी बिल्ली लाहौर हुआ होता
अगर नरेंद्र मोदी आज लाल किले पर खडे होते
उनके आगे आज पाकी जोडे हाथ खडे होते....!

❑ राजीव शाह

Sushil Kumar Pandeyy
9958561832, 9213796552
MONEY MANAGERS
CONSULTANT- TAX MATTER, RETAIL ASSETS, WORKING CAPITAL
PAN CARD, ITR, BOOK, KEEPING, SALES TAX, PF, ESI, FACTORY ACT.
CMA Data, Cash Credit/Over Draft/WCDL/LAP. PL, DOD Limit, Housing Loan, Vehicle Loan insurance & Investment solution
Office:- A-115, Vakil Chamber, Top Floor, Shakarpur Delhi-92
Resi- D-17, Ganesh puri, Sahibabad, Ghaziabad (U.P.)

नारी मुक्ति : कागज से धरातल पर

पत्नी को सिरीयल
का चरित्र अपने जैसा लगा,
तुरन्त उसने पति को छोड़ देने
की योजना बनाई।
जब उतरी कहानी–
कागज से धरातल पर
तब पत्नी की समझ में–
हकीकत आई
मुक्ति चाहती है किससे?
ये मालूम नहीं–
सच के दायरे में, सच्चाई नहीं
नाम का सच है,
पति के साथ नहीं तो–
पति के नाम के साथ तो जुड़ा
रहना पड़ेगा–
संस्कृति के तहत!
नाम से जीना ही ..
ढाल बना रहता है
पतिता जैसा नाम कहलाने से–
औरत की गरिमा
को ठेस पहुँचाती है।
'मुक्ति'
नाम से जुड़ती है
परंपराएँ संस्कृति।

❑ साहित्यकार श्रीचरन

Page 1 Continue...

THE LOTUS LION...

Congress party, which has already met with its failure in fulfilling their assurances. The maestro spoke of the pre-election promises published by Congress party regarding the facilities of Rozgar to 1 crore people, that is not at all possible, since the party is in the rule at center. He also satire the saying of the party leaders as "one man can not do anything" and said that, one man can do everything with will for which he substantiated with the instances of Indian independence, the division of states and the inclusion of Kashmir into the country, which were all done by an individual person. He also mocked at the incompleteness of works, which were undertaken by the central government ended in malfunction.

Mr. Modi justified his appeal for vote by quoting the instances of 7 national awards on April 21st as a part of 'All Indin Service Day' for BJP in different states especially 2 for Karnataka state for rural development, which is given by the central government itself. The failure of Indira Gandhi's dream programmes by all congress ruling states was also highlighted and the success of same projects by BJP ruling states was made as a point. He also appreciated Karnataka police, who have won medals during the rule of BJP at state and got them by the same Congress party. He also took charge against Rahul Gandhi blaming against state government while campaigning and answered by quoting the achievements. He also quoted the recent north east crisis at bangalore which caused their imigration, that was sensibly handled by the BJP government and appreciated Mr. R. Ashok, the state home minister for being been to north east state for conueying the message of their safety at the silicon city and added such gesture as vital. He also made ridicule over the inherited leadership of other parties persuading to slavery and called them as golden spoon holders, who can not understand the wishes of common voters. The Gujarath captain directly made an attack about the context of Congress party as their mouth is sealed by Italy. He also spoke of 2G spectrum scandal, which is of 1 lakh 76 thousand crores and satired that if to start to write it in figures from race course road near PM house, the last zero will end at Janpath near Soniya Gandhi's house to reflect the center's situation. The CM called the Congress party as communal who wish the brothers to fight among themselves and thus implementing the divide and rule policy on people, which does not fit Karnataka, for which Modi called as 'miny Hindhusthan' as all are living together. He further proclaimed that, Soniya at Jaipur says her son, power is poison, but the same son asks for power in Karnataka. Through that instance, Modi also tried to prove the dishonest of Bongress, who promised of curbing inflation in 100 days that also ended in failure. He upheld the insecurity of Delhi concerned with gang assaults where the entire powerful institutions like CBI vests, and questioned the voters whether they can rule Karnataka. he also questioned the voters themselves about the developmental activities since 1995 and made a comparison between two parties' rule in different parts of the country and Karnataka alone too in the last 5 years. He assured that, heknows Mr. shetter ten years who has given a good administration since 9 months. He also told that he is having faith on Karnataka's voters who do as similar as his state's voters did in 1995 by rejecting at 1st that caused changing of 4 governments in 9months and led to BJP's rule for 12 years. The CM requested the voters not to trust Congress, who come up with new mask every time. He asked to show the CM candidate of Congress for Karnataka not the hands but his face. He also appealed the voters to vote by seeing the face value not by looking at the hands satiring on the symbols.

He said that, there is a wave in favour of BJP in karnataka as similar to Gujarath and requested the voters to vote the party to have good governence. Mr. Modi also hoped that, the people will give another term to the party, as the government has capability to give good administration, as given since 5 years. The leader taught the importance of voting along with appealing for voting to lotus on May 5th and not for hand and also gave a call to join the journey of development in building the future of the nation. Further he proceeded, by calling the youth as nation builders to inspire the young generation to-

Mobile Dental Health Camp...

Dulumoni Devi

How often we visit our Dental health care provider for a regular check up? Well not many of us! Though the oral health care is one of the most demanding health care needs of the masses, we usually under look this due to our casual attitude and less awareness. To raise the consciousness in the general public towards importance of dental health care, the Clove Dental clinic, a multi-speciality dental chain clinic, is organising a series of Dental Health Camps all around Delhi and NCR.

'The dental problems are the problem of the civilisation. Due to change in the food eating habits from traditional to more western and also due to stressful life style, there are more and more dental problems in the population' said Dr Sujit Pradhan, a dental surgeon of the mobile health camp unit.

Mr Sharfaraz, the incharge of arranging Dental health unit of Clove Dental said 'Our Aim is to spread the awareness among the people that by conducting such free Dental camps in their neighbourhood. We are encouraging RWAs , various institutions and schools to help us organise such events. We had already successfully conducted more than 30 camps in Delhi-NCR region in last 10 months and the response is v.good.'

Last week camps were organised at Rajori gardens, NIFT Hauz Khas and Vikashpuri.

The Vikashpuri's H Block RWA president, Mr B.L Anand , praised the organisers and said ' more than 80 people came for the check up and got to know about their dental problem'.

Subdued Asia-Pacific growth in 2013 as region impacted by developed world policy uncertainty

ESCAP flagship Survey calls for a paradigm shift in macroeconomic policies to make growth inclusive and sustainable

New Delhi (UN ESCAP Strategic Communications and Advocacy Section) - Asia-Pacific economies will see subdued growth in 2013 after last year's sharp slowdown caused by external factors, the United Nations said today, adding that efforts to stimulate demand must go hand in hand with macroeconomic course correction to promote broad-based and sustainable development.

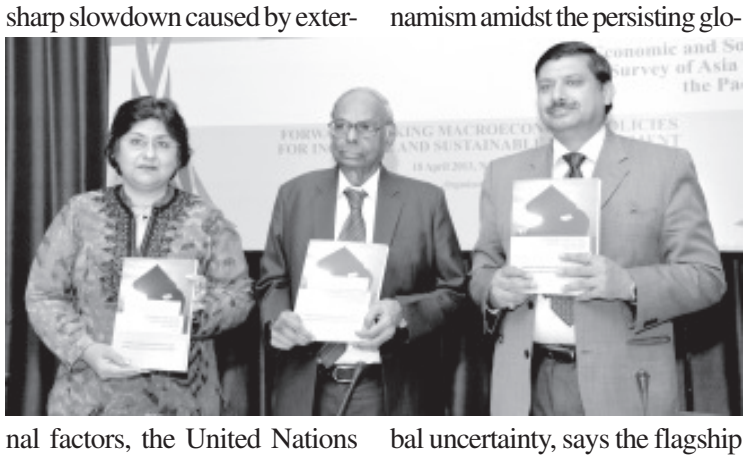

Noting that the region's economic progress has been marked by widening income inequalities and severe natural resources depletion, the Economic and Social Survey of Asia and the Pacific 2013: Forward-looking macroeconomic policies for inclusive and sustainable development argues that macroeconomic policies can play a vital role in reorienting the region towards a more inclusive and sustainable growth path - a high priority of its post-2015 development agenda.

Inclusive and environment-friendly growth is key to creating new sources of economic dynamism amidst the persisting global uncertainty, says the flagship publication of the Bangkok, Thailand-based United Nations Economic and Social Commission for Asia and the Pacific (ESCAP) which estimates that economic policy uncertainty in the eurozone and the United States since the onset of the global crisis has shaved 3 per cent off regional GDP - a loss of $870 billion in output.

"The 2013 Survey reminds us that this is no time for complacency, as the need for a more inclusive and sustainable pattern of economic and social development continues to be critical," United Nations Under-Secretary-General and Executive Secretary of ESCAP, Dr. Noeleen Heyzer said in her preface to the Survey.

"In the light of the region's high degree of economic insecurity, large development and infrastructure gaps and heightened environmental fragility along with extreme exposure to climate change-related risks, it is necessary to better balance the stabilization and the developmental roles of macroeconomic policies," Executive Secretary Heyzer added.

Limited pick up in growth

The expected improvement in global demand arising from steady growth in the United States and the limited rebound in major emerging economies is projected to help raise developing Asia-Pacific growth to 6.0 per cent in 2013 from 5.6 per cent last year.

China is estimated to record a moderate increase in growth from 7.8 per cent in 2012 to 8 per cent while India is projected to recover somewhat from last year's low of 5 per cent to 6.4 per cent in 2013.

Oil and gas exporting North and Central Asia will continue to benefit from high global energy prices, maintaining steady growth. In South and South-West Asia, the economies of Afghanistan, Bangladesh, Bhutan and Sri Lanka are projected to grow 6 per cent or more in 2013.

Formation of ALLIANCE OF HEALTH ASSOCIATION OF INDIA (AHAI)

Was a watershed day, when nearly all the major health care professionals' registered associations across the country, which included around 30 (thirty) associations

representing around 8,00,000 (8 lakh) of Doctors from Specialities & Super Specialities, General Physicians, Psychiatrists, Nurses, Paramedics, Physiotherapists, Pharmacists, Practitioner from Ayush and Homeopathy system, and other medical speciality organizations, joined their hands together to form a professional health alliance and an umbrella body under the name ALLIANCE OF HEALTH ASSOCIATION OF INDIA (AHAI)

This urgent step was required to address the following issues:

A) A higher national health budget from the present spend of 0.09% to 3 to 4% of the GDP in line with other developing nations;

B) Abolition of the Consumer Protection Act for all healthcare professionals;

C) Stringent steps to stop and deter violence against healthcare professionals;

D) Complete abolition of quackery by introducing strong penal measure;

E) Cross referral between healthcare specialities and domains;

F) Abolition of the Central Establishment Act;

G) Revising pay scales and compensations of healthcare professionals to rational levels so that the professionals feels secured and respected;

H) Campaign on "Save The Girl Child";

I) Integrated medical care for each and every citizen of the nation;

After a long and eclectic deliberation, leaders of all the bodies agreed for the formation of a professional health alliance under the aegis of "Alliance of Health Association of India (AHAI)".

ASSAULT EMPHASIZED BY ADMINISTRATION

THE SYSTEM ASSAULTING THE WOMEN FOLK

One more gang assault reported in the country! The city once felt as safe now in fear! The protectors being the rescuers of criminals! This story is the depiction of the victimisation of a young woman, which is taking place with the help of law. Yes, an unbelievable insiden shook the people of Bangalore on the evening of wednesday. A gang rape reported in the silicon city. The city which was known for its safer educational place revealed its reality regarding the helplessness in viewing a gang assault which took place as similar as of Delhi's case in the month of December.

A nursing student is the victim again! It is the horror sunday insiden. It was 8.50 am! a nursing college student of Sarjapur was waiting for her bus in the bus stop of Mother Thereza road, who was trapped by 3 strange men. As per the police statement, the 3 men came in Mahindra Scarpio, who falsified as lost their direction and created chaos with the young girl who is in her twenties. The girl was forcibly taken into the vehicle and was brought into an unknown house, which she could not recall, where she was forcibly made to consume alcohol and was simultaneously sexually assaulted by the men.

It was 7.40 so! The nasty men threw back the girl to the street after molestation. The girl could hardly walk till her hostel and collapsed, who was admitted in ST. Philomena hospital, which is attached with the hostel. The doctors have finished a their complete medical checkup and confirmed the gang molestation taken place on sunday itself. The girl was in a deep shock who could not completely remember the location of the house. The case has been filed in Ashok Nagar police station on monday and the police have arrested 3 men by wednesday evening who are still under interrogation and the police have even rejected the intervention of media in exposing the document with the reason of preserving confidentiality of the case.

The police seems to be diluting the case! Protecting the criminals than rescuing the victim! Mistake finding department has committed mistake that to in such an important case! The police have already made a considerable delay in finding the criminals. In addition to that, the police has wrongly booked the case under IPC section 376 (D) instead of booking under IPC 376. The sub section which has been cooked is highly irrelevant to the case and weak, which is related to the sexual intercourse committed by a higher official at hospital to his student which is not a rape. It permits for just 5 years imprisonment or a very less fine. But the case should be booked under the main section which is for sexual assault and awards the guilty with life time imprisonment and fine too. A high court advocate G.r Mohan has identified such 40 cases, where the sections are mis placed. In spite of all these realities, the DCP Mr. Ravi Kanthe Gowda rejects the fault of the police and even refuses to give his statement. On the contrary, the joint commissioner Mr. Pranab Mohanthy accepts the fault and talks of correcting it while submitting the charge sheet, which shows the dual standardmess of the department. However. The further tragic context is that the city which once rose with revolution at all colleges against an assault during December has now kept dumb about the event that has passed in front of the eyes. The insiden must at least now become an eye opener for the entire social, judicial and administrative system before the students and other outsiders who came for a safe shelter by dreaming of the city as the safest start their immigration. He not it is sure that, the educational institutions of the city now filled with thousands will be left with emptiness in the future.

राजस्थान राज्य कार्यकारणी का गठन 1 जून को

राजस्थान राज्य कार्यकारणी का कार्यकाल समाप्त ३० अप्रैल को हो चूका है साथ ही साथ राजस्थान मे जितनी भी जिला ईकाई है उन सभी का गठन १ जून के बाद किया जाएगा १० अप्रैल को जयपुर मे कार्यकारणी के सदस्यों के साथ एक बैठक मे संस्था के राश्ट्रीय महासचिव श्री विपिन गौड़ ने ये घोषणा की थी की ३० अप्रैल को राजस्थान की कार्यकारणी जो चल रही है उसे भंग किया जाएगा व १ जून को नई कार्यकारणी का गठन किया जाएगा।

राजस्थान मे सभी सदस्यों को सूचित भी किया जाता है यदि कोई भी राज्य व जिला कार्यकारणी से जुड़ना चाहते है व किसी भी पद की इच्छा रखते है वह www.naiindia.com पर जाकर सभी शर्तें मापदंड की पात्रता को पढ़ ले। राज्य व जिला ईकाई के लिए अपने नाम का नामांकन करने के लिए दिए गए फॉर्म को भर के दिल्ली कार्यलय मे जमा करा दें सभी सदस्य का योगदान सराहनीय है।

Be Safe in summer ladies !

Damini Priya
BMC 1st year

Summer hues are back . College girls are out their shopping away to glory . Everyone wants to make a statement out of their dressing . But there are many things to keep in mind before wearing cut sleeve tops and tiny shorts . It is not cool to burn off your skin in the scorching and atrocious heat . One should wear covered clothes as much as possible . Applying sunscreen is undoubtedly an essential , but that is not enough . Girls should carry an umbrella and a scarf at all times . Wearing blue denims and loose tees or simply a patiala with a kurti is the best way to beat the heat . It looks trendy as well as avoid tanning . Girls , you need to keep in mind , following the crowd blindly and wearing tiny clothes is not "HOT" ! Step out and make your own style statement this summers.

Publishing on 10th of every month
RNI No. 62500/95
REGD. No. DL (E)-01/5149/2012-2014
LICENCE TO POST WITHOUT
PRE-PAYMENT No. U(C)223/12-14

To,

If undelivered, Please return to:
न्यूज़ पेपर्स एसोसिएशन
ऑफ इण्डिया
POST BOX 9235, NEW DELHI-110 092

यदि आप लेख, रचना, समाचार, विचार प्रेषित करना चाहते हैं तो आप अपने अप्रकाशित लेख निम्न पते पर भेजें।

आपको ***NAI*** का यह अंक कैसा लगा, इस बारे में अपने सुझाव हमें निम्न पते पर भेजें।

एन. ए. आई.
A-115, Vakil Chambers, Top Floor,
Shakarpur, Delhi-110092, Ph.: 011-22058133

Editorial Board

Founder	Late Dr. M. R. Gaur
Editor Publisher-Printer	Vipin Gaur
Counsultant Editor:	Dr. Smita Mishra
Managing Editor:	Dilip Kumar
	K. R. Arun
Legal Advisors:	Nikhat Anjum Malik
Advocate Delhi Highcourt	Rajesh Sharma
	Adv. P. Yadav
Office Secretary	Kavita Bamotra

- Bureau Chief -

Guwahati:	Runu Hazarika
Mumbai:	Mr. Dinesh K. Mishra
Bangalore:	Mr. M. K. Jain
Jaipur :	Mr. Bhanwar Singh Ranawat
Chennai:	Mr. P.C.R. Suresh
M.P. & C.G.	Mr. O. P. Jain
Kerela	Mr. Suvarna Kumar
Goa	Dr. Vivek Gaitonde

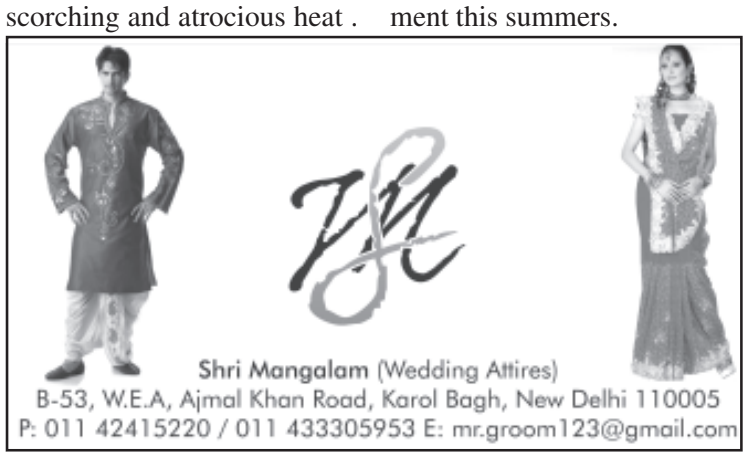

Printed, Published by Vipin Gaur on behalf of News papers Association of India, Printed at Mayank Offset Process 794/95 Guru Ramdas Nagar Ext. Laxmi Nagar Delhi-92 and Published from J-51, DLF Dilshad Delhi-95, Editor: Gayatri Gaur. All disputes settled in Delhi Court only.